स्वयं सहायता समूह के विकास व सशक्तिकरण में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका

Role of Social Worker in the Development and Empowerment Of SHG)

डॉ. नवल सिंह राजपूत
सहायक आचार्य,
उदयपुर स्कूल ऑफ सोशल वर्क,
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

आधुनिक समाज कार्य, व्यवसाय के रूप में विकसित एक समस्या समाधान की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। मानव जीवन से सम्बन्धित अनेक मनोसामाजिक समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से निराकरण इस व्यावसायिक प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है।

सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य (social case work) द्वारा महिलाओं के आत्मविश्वास व समस्या समाधान की क्षमता में वृद्धि की जाती है। कार्यकर्ता (social worker) सेवार्थी के साथ व्यावसायिक सम्बन्ध स्थापित करता है तथा सेवार्थी की समस्या को सुलझाने में उत्प्रेरक की भूमिका अदा करता है। वह ऐसा माहौल विकसित करता है कि सेवार्थी स्वयं अपनी समस्या को सुलझाने की दिशा में सक्रिय हो जाता है। सामाजिक समूह कार्य (social group work), समाज कार्य की एक प्राथमिक प्रणाली है, जो सामूहिक क्रियाओं द्वारा व्यक्तियों का विकास करती है। सामाजिक कार्यकता, समूह पर सकारात्मक व रचनात्मक प्रभाव डालता है। वह समूह के सदस्यों की कार्यक्रम नियोजन व समूह की रुचियों की खोज करने में सहायता करता है। सामाजिक समूह कार्य विधि (social group work) द्वारा स्वयं सहायता समूह के सदस्यों में नेतृत्व व जागरूकता का विकास किया जाता है।

सामुदायिक संगठन (community organisation) के द्वारा सामाजिक कार्यकर्ता क्षेत्र की जरूरतों एवं उपलब्धों साधनों के बीच सामंजस्य स्थापित करता है और इसमें जो कठिनाईयाँ व समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, उनका समाधान करता है। सामुदायिक संगठन कार्यकता, समूह के लिए उन साधनों की खोज करने में सहायता करता है, जिससे की आवश्यकता एवं समस्याओं का समाधान सम्भव हो सके। समुदाय में कई ऐसी संस्थाएँ होती है, जो समूह की भलाई के लिए कार्य करती है लेकिन समूह को उनका ज्ञान नहीं होता है। सामाजिक कार्यकर्ता इन संस्थाओं का पता लगाकर इनकी सेवाओं का उपयोग किये जाने पर बल देता है। सामुदायिक संगठन विधि द्वारा कार्यकर्ता स्वयं सहायता समूह के सदस्यों की क्षमता में वृद्धि करता है। समूह की सफलता व रोजगार के लिए आवश्यक प्रयासों के स्तर का पता लगाता है। सामाजिक कार्यकता सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य (social case work), सामाजिक समूह कार्य (social group work) व सामुदायिक संगठन (community organisation) द्वारा महिलाओं के आत्मविश्वास व समस्या समाधान की क्षमता में वृद्धि करता हैं।

सामाजिक कार्यकर्ता (social worker) की एक पथ–प्रदर्शक के रूप में, सहायक के रूप में, विशेषज्ञ के रूप में भूमिका होती है जो निम्न है–

कार्यकर्ता पथ प्रदर्शक के रूप में–

सामाजिक कार्यकता समूह को अपने उद्देश्यों और उनकी प्राप्ति के साधनों के निर्धारण करने में सहायता प्रदान करता है तथा स्वयं सहायता समूह को बुद्धिमतापूर्ण ढंग से अपने कार्य की दशा को निर्धारित करने तथा चुनी गई दिशा में चलते रहने में पथ प्रदर्शन करता है।

स्वयं सहायता समूह का स्तर / कार्यकर्ता की भूमिका (डॉ. ए. एन. माखीजा 2013)

क्र. सं.	स्तर	अवधि		कार्यकर्ता की भूमिका
1.	प्रारम्भिक चरण	3 महिना	प्रारम्भ दाता के रूप में	☐ गैर सरकारी संगठन द्वारा आयोजित बैठक में भाग लेना। ☐ ग्रामीण सहभागी मूल्यांकन विधि द्वारा गरीब परिवार की पहचान करना। ☐ जागरूकता का पता लगाना।
2.	निर्माण स्तर	3–24 महिने	प्रमोटर के रूप में	☐ समूहों का आयोजन करना। ☐ नेतृत्व व पदाधिकारियों का चयन करना। ☐ स्वयं सहायता समूहों के नियमों व उपनियमों को विकसित करना। ☐ बचत वह ऋण का संचालन करना। ☐ समूहों की बैठक का नियमित संचालन करना। ☐ ऋणों की अदायगी करवाना।
3.	स्थिरीकरण चरण	24–60 महिना	फेसीलेटर के रूप में	☐ प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेना। ☐ कौशल विकास। ☐ समूहों को बैंक से जोड़ना। ☐ उत्पादन के लिए ऋण दिलाना। ☐ लेखाकार प्रणाली सुव्यवस्थित करना। ☐ नये समूह का गठन व पुराने समूह का स्थिरीकरण करना।
4.	विस्तार / विकास स्तर	60–96 महिने	सलाहकार के रूप में	☐ स्वतंत्र रूप से कम समर्थन के साथ स्वयं सहायता समूह को लेन–देन सौंपना। ☐ क्लस्टर व संघों का निर्माण करना। ☐ पंचायत कार्यालय के साथ सम्बन्ध स्थापित करना। ☐ सामुदायिक मुद्दों को उजागर करना। ☐ आय सृजन के कार्यक्रम तैयार करना।
5.	स्वायत्ता का स्तर	8 या 9 साल बाद	वापसी विड्रोल के रूप में	☐ महासंघ का गठन करना। ☐ व्यापक विकास व राजनीति प्रक्रिया में भाग लेना।

- **सहायक रूप में–** सामाजिक कार्यकर्ता स्वयं सहायता समूह की प्रक्रिया को आसान बनाता है। विशेष रूप से इसका सम्बन्ध असन्तोष को केन्द्रित करने, समूह को प्रोत्साहित करने, सामान्य लक्ष्यों पर बल देने से है। एक सहायक के रूप में कार्यकर्ता की भूमिका स्वयं सहायता समूह को सहयोगात्मक कार्य में सेवाएँ प्रदान करना है। स्वयं सहायता समूह के सदस्यों में अन्तःशक्तियों एवं शक्तियों का अनुभव कराने के लिए प्रत्यक्ष सलाह भी देता है।
- **विशेषज्ञ के रूप में –** सामाजिक कार्यकर्ता अनेक क्षेत्रों में विशेषज्ञ के रूप में प्रत्यक्ष सलाह भी देता है। कार्यकर्ता स्वयं सहायता समूह की समस्या तथा उसके निदान में अपनी सेवाएँ प्रदान करता है। प्राविधिक सूचना प्रदान करता है और साथ ही मूल्यांकन में सहायता प्रदान करता है।
- **सामाजिक उपचारक के रूप में–** कार्यकर्ता समूह की अनेक मनोसामाजिक समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से निदान तथा उपचार करता है। कार्यकर्ता उन सामाजिक शक्तियों, निषेधों एवं उन विचारों का पता लगाता है, जो स्वयं सहायता समूह का विघटन लाते है और संघर्ष उत्पन्न करते हैं। एक सामाजिक चिकित्सक के रूप में वह समूह को बताता है कि वह संघर्ष को किस प्रकार दूर कर सकते है और किस प्रकार समूह में एकता और अनुरूपता ला सकते है ।
- **शिक्षक के रूप में–** एक शिक्षक के रूप में कार्यकर्ता समूह की तर्कहीन विश्वासों और धारणाओं का निराकरण करता है तथा साथ ही वह सदस्यों को उनकी सामाजिक स्थितियों से सम्बन्धित क्षेत्रों में हो रहे घटना क्रम की जानकारी देता है।

स्वयं सहायता समूह के निर्माण व सशक्तिकरण में सामाजिक कार्यकर्ता की अनेक भूमिका रहती है। सामाजिक कार्यकर्ता समूह के सदस्यों के लिए वैकल्पिक रोजगार के अवसरों को उपलब्ध कराता है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। सामाजिक कार्यकता समूह के सदस्यों को एच.आईवी./एड्स. ,कानून, दहेज, बाल–विवाह, बाल–श्रम, कन्या भ्रूण हत्या, आदि के बारे में जागरूक करता है।

सारांश :–

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि स्वयं सहायता समूह के निर्माण व सशक्तिकरण में सामाजिक कार्यकर्ता की निर्णायक भूमिका होती है। वह सामर्थ्यदाता, मध्यस्थ, शिक्षक आदि के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामाजिक कार्यकता सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य (social case work), सामाजिक समूह कार्य (social group work) व सामुदायिक संगठन (community organisation) द्वारा महिलाओं के आत्मविश्वास व समस्या समाधान की क्षमता में वृद्धि करता हैं। अतः स्वयं सहायता समूह एक ऐसा मंच है जहाँ सामाजिक कार्यकता एक बहुआयामी भूमिका निभाता है।

संदर्भ ग्रथं सूची

ख1, गोयल सुरेश, ''स्वयं सहायता समूहों की संरचना एवं ग्रामीण साख में इनकी भूमिका'' प्रशासनिक खण्ड संख्या 2, 2003, पृष्ठ 20–23

ख2, अनिल कुमार, ''एकीकृत जलग्रहण विकास'' प्रवेश बिन्दु एवं प्रशिक्षण सदंशिका भाग–द्वितीय शिपा प्रकाशन, जयपुर, 2011, पृष्ठ 5–13

ख3, कपूर विनोद, ''स्वर्ण जयन्ति ग्राम स्वरोजगार योजना'', जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, उदयपुर, 2002, पृष्ठ 1–5

ख4, मल्होत्रा राकेश, ''स्वयं सहायता समूह–एक व्यावहारिक, मार्गदर्शिका'', एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नाईस प्रिंटर्स दिल्ली, 2007, पृ. सं. 3–8

ख5, अभय कुमार, जिला विकास अभिकरण, उदयपुर ''स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण'', 2003, पृ. सं. 3–5

ख6, राजस्थान पत्रिका (2016) :''ग्रामीण महिलाओं को बना रहे आत्मनिर्भर'' जून, 2016, पृ. सं. 16

ख7, कुमार अनिल (2011) : ''एकीकृत जलग्रहण विकास'' प्रवेश बिन्दु एवं प्रशिक्षण संदशिका, भाग–1, शिप्रा प्रकाशन, जयपुर।